मनसा सेवा - 102

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सभी अपने को ऐसे विशेष सेवाधारी समझते हो ना! आज के समय अनुसार विश्व की आत्माओं को आवश्यकता किस चीज़ की है, जानते हो ना! **आज विश्व को खुशी, शक्ति और स्नेह की आवश्यकता है।** आत्मिक स्नेह चाहते हैं लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें अभी समय अनुसार दाता बनो। मन्सा से शक्तियाँ दो, वाचा से ज्ञान दो और कर्मणा से गुणदान दो। (24. 03. 2009)

➳ _ ➳ बापदादा सभी बच्चों को यही बार-बार कहते कि आत्माओं के प्रति रहमदिल बनो। आजकल दु:ख अशान्ति के कारण सभी दिल से कहते हैं रहम करो, दया करो। तो बाप के साथी आप बच्चे हो, तो बाप बच्चों द्वारा अभी हर एक बच्चे का रहमदिल का पार्ट देखने चाहते हैं। आपका उमंग है कि दु:खमय संसार बदलकर सुखमय संसार आना ही है। तो सुखमय संसार आने के लिए यह दु:ख अशान्ति का विनाश होने के लिए हालतें बदल रही हैं। **तो आज का यही बाप का सन्देश याद रखो कि अब चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे चेहरे और चलन से सेवा की गति बढ़ाते चलो। अपना राज्य समीप लाते चलो।** (15. 12. 2009)

➢➢ **आज विश्व की आत्माओं को खुशी, शक्ति और स्नेह की आवश्यकता है।**

➳ _ ➳ इसलिए समय अनुसार दाता बनो

➳ _ ➳ **आत्माओं प्रति रहमदिल बनो**

→ क्योंकि आत्माएं दु:ख, अशांति के कारण दिल से कहती है की रहम करो, दया करो

- **हमें रहमदिल बनना है, दाता बनना है**
- **मनसा, वाचा, कर्मणा, चेहरे, चलन सबसे सेवा करनी है**

➳ _ ➳ रहम अर्थात कल्याण की भावना

➳ _ ➳ रहम किस पर किया जाता है?

→ जिसने कोई अपराध किया है उसको क्षमा करना

→ जो कमजोर है उस पर

→ जो जख्मी है

→ जो निरीह, असहाय है

→ जो परवश आत्माएं हैं

→ बेसहारा, Hopeless

➳ _ ➳ **रहम को सभी धर्मों में, सभी शास्त्रों में ईश्वर का गुण दिखाया है**

→ **भगवान दया सिन्धु, करुणा सिन्धु है**

- हे प्रभु मेरे पाप, अपराध बेहद हैं, अनगिनत हैं पर तेरी कृपा और दया भी तो बेहद है, अनगिनत है

→ रघुनाथ बिना किसी कारण के ही कृपा करने वाला है

- कृपा करना, दया करना, रहम करना ये उसका स्वभाव है

→ क्रिश्चियनिटी में Ocean of Mercy, Ocean of Compassion

- सब पर कृपा करने वाला
- गरीबों की सेवा करना, मिशनरी वर्क्स सब यही है

→ स्वामी विवेकानंद भी गरीबों की सेवा करते थे

- मानव सेवा अर्थात माधव सेवा
- सबसे निचली जातियों की सेवा करना

→ इस्लाम धर्म में 99 नाम है अल्लाह के

- पर 100 वां भी नाम है पर वो गुप्त है
- सूफियों की किताबों में है की ये सब मनुष्यों के दिए नाम है, वास्तविक नाम तो जब वो स्वयं आएगा तब वो नाम बताएगा

- दो नाम दया और कृपा पर हैं- अल रहमान और अल रहीम
  - रहमान और रहीम शब्द रहमत से है
  - रहमत अर्थात कृपा, दया, अनुकंपा

→ यहूदी धर्म में भी इसका बहुत महत्व है

→ भारत के दो और महत्वपूर्ण धर्म है- बौद्ध धर्म और जैन धर्म

- इनमें भी करुणा शब्द का प्रयोग किया गया है
- रहम की, कृपा करने की भावना है

→ दया, कृपा और रहम ये बातें नई नहीं है, द्वापर से ही चालू हो गई हैं

→ सभी धर्मों ने दया को ऊंचा माना है तो दया गरीब पर किया जाता है, दया करने गरीब, दुखी, लाचार चाहिए..

→ रहम दो प्रकार का है- एक स्वार्थ वाला और दूसरा निस्वार्थ वाला, अहं वादी, निरहंकारी वाला

- दया करने से ही स्वर्ग जा सकेंगे तो पहले गरीबों की उत्पत्ति हो तब उन पर रहम करें जो स्वार्थ वश रहम है
- मिशनरी जैसे गरीबों के लिए स्कूल खोले तो उनका लक्ष्य होता है की वो सब Christian में कन्वर्ट हो जाएँ..
  - इस तरह का रहम ना हो

➳ _ ➳ **आत्माएं दुखी, अशांत है हमें रहमदिल बनना है**

→ **लास्ट आत्माएं कमजोर हैं लेने की भी शक्ति नहीं है, तुम उन्हें दो वरदाता बनकर**

➳ _ ➳ बाइबिल में है पिता परमात्मा है जो भी गलतियाँ करें और वो वापस आ जाता है तो उसे माफ़ कर देता है

➳ _ ➳ हमें किस पर रहम करना है-

→ **जो ज्ञान छोडकर चले गए उनको वापस लाना है**

- उनको चिट्टी लिखो, उनका स्वागत करो
- टोली पहुँचाओ, भोग पहुँचाओ
- पूछो-हमसे कोई गलती तो नहीं हुई
- VIPs को लाते हैं, शिविर में, कांफ्रेंस में लोगों को लाते हैं

पर जो ज्ञान में आये, बाबा से मिले फिर छोडकर चले गए,

- उनको वापस लाने की प्लानिंग करनी है- मनसा सकाश दें, आह्वान करें, उनके घर में जाकर उनसे मिले, पूछें, माफ़ी मांगे.. ये सेवा रही हुई है

→ **जो परवश है, दुखी है, अशांत है, जिन्होंने पहले हमारा अपमान किया, जो थोड़े यज्ञ के विरोधी है, नेगेटिव हैं, Oppose करते हैं, निंदा करते हैं, व्यंग्य बाण छोड़ते हैं**

→ जो भूले हुए हैं, भटके हुए हैं, अब तक जाना नहीं है जिन्होंने

→ **सब पर चाहे किसी ने व्यक्तिगत हमसे कुछ गलत किया हो**

➳ _ ➳ **हमें सब पर कृपा करनी है, कृपा करो तो तुम पर कृपा होगी**

→ **Have mercy then you shall be showered with mercy..**

➳ _ ➳ **सबकी हम पर हुई है इसलिए हमें अब सब पर कृपा करनी है**

→ **जब युग ही बदल रहा है तो आत्माएं भी बदलेंगी- ये भाव को भूलना नहीं है**